International Gita Mahotsav

17 November - 3 December 2017

Kurukshetra, India

कर्त्तव्यनिष्ठा, शान्ति-सद्भाव की वैश्विक प्रेरणा

अष्टादश श्लोकी भगवद् गीता

Let us
Chant Gita
across the Globe
at one moment of time
for strength & peace

On 30th November 2017
Gita Jayanti day
12:00 h - 12:15 h

धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः ।
मामकाः पाण्डवाश्चैव किमकुर्वत सञ्जय।। (गीता 1/1)

dharmakṣetre kurukṣetre samavetā yuyutsavaḥ
māmakāḥ pāṇḍavāś caiva kim akurvata sañjaya

श्रीमद्भगवद्गीता का प्रथम श्लोक ! चेतावनी और प्रेरणा साथ-साथ। भेद बुद्धि, पक्षपात पूर्ण संकीर्ण सोच ही वैमनस्य -विद्वेष, कलह-क्लेश का मूल कारण हैं ! समबुद्धि-उदार सोच कर्म को ही धर्म बना सकती है ! धर्मक्षेत्रे-कुरूक्षेत्रे का लाक्षणिक अभिप्राय यही है ।

In the field of righteousness, the field of the Kurus, when my people and the sons of Pandu had gathered together, eager for battle, what did they do, O Samjaya?

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि।। (गीता 2/47)

karmaṇy evā dhikāras te mā phaleṣu kadācana
mā karmaphalahetur bhūr mā te saṅgo 'stv akarmaṇi

अपने कर्त्तव्य के प्रति पूर्ण समर्पित निष्ठा; प्रमाद, कोताही, लापरवाही नहीं ! मुझे क्या मिलेगा - यह सोच कृपण, संकीर्ण बनाती है, क्षमताओं को कमजोर करती है ! मैं क्या दे सकता हूँ- यह भाव बनाकर कर्त्तव्य पथ पर आगे बढें, अनुभव करें मानसिक सन्तुष्टि क्षमताओं का विकास, सामाजिक सम्मान एवं ईश्वरीय कृपा।

To action alone hast thou a right and never at all to its fruits; let not the fruits of action be thy motive; neither let there be in thee any attachment to inaction.

कर्मणैव हि संसिद्धिमास्थिता जनकादयः।
लोकसङ्ग्रहमेवापि सम्पश्यन्कर्तुमर्हसि।। (गीता 3/20)

karmaṇai' va hi saṁsiddhim āsthitā janakādayaḥ
lokasaṅgraham evā pi sampaśyan kartum arhasi

कर्त्तव्य पथ पर बढ़ते हुए अच्छा आदर्श आवश्यक है। लोक संग्रह के भाव से कर्म हों, आसक्ति निज हित अथवा अपनी स्वार्थ पूर्ति के लिए नहीं। परहित, जनहित, लोकहित की व्यापक सोच बनाएं ! राजा जनक का उदाहरण इसी भाव से है।ऊँच-नीच की दूरियाँ मिटाने, समाजिक समता,समरसता सद्भावना लाने एवं राष्ट्रीय गौरव बढ़ाने हेतु यह श्लोक विशेषतः 'लोक संग्रह' शब्द अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

It was even by works that Janaka and others attained to perfection. Thou shouldst do works also with a view to the maintenance of the world.

एवं ज्ञात्वा कृतं कर्म पूर्वैरपि मुमुक्षुभिः।
कुरु कर्मैव तस्मात्त्वं पूर्वैः पूर्वतरं कृतम्।। (गीता 4/15)

evaṁ jñātvā kṛtaṁ karma pūrvair api mumukṣubhiḥ
kuru karmai 'va tasmāt tvaṁ pūrvaiḥ pūrvataraṁ kṛtam

अपने-अपने क्षेत्र का समृद्ध अतीत देखें। जिन्होंने अच्छे संकल्प, अच्छी कर्त्तव्यनिष्ठा के साथ अच्छे आदर्श प्रस्तुत किये; अपने कार्य क्षेत्र के साथ-साथ समाज एवं राष्ट्र का सम्मान बढ़ाया, आदर्श, प्रेरणा के रूप में अपना नाम बनाया -यह गीता मंत्र अनूठी प्रेरणा हैं- अपने कर्म एवं जीवन यात्रा को उसी पथ पर आगे बढ़ाने के लिये।

So knowing was work done also by the men of old who sought liberation. Therefore do thou also work as the ancients did in former times.

ब्रह्मण्याधाय कर्माणि संङ्गं त्यक्त्वा करोति यः।
लिप्यते न स पापेन पद्मपत्रमिवाम्भसा।। (गीता 5/10)

brahmaṇy ādhāya karmāṇi saṅgaṁ tyaktvā karoti yaḥ
lipyate na sa pāpena padmapatram ivā 'mbhasā

कर्म करते हुए अहंकार बुद्धि नहीं! ईश्वरीय कृपा का आधार, ईश्वरीय कृपा से मुझे इस पद या दायित्व के रूप से समाज, राष्ट्र एवं मानवता की सेवा का सौभाग्य मिला है- ऐसा भाव। किसी व्यक्तिगत अथवा बाह्य वातावरण की बुराई का प्रभाव अपने ऊपर नहीं, अपनी अच्छाई की सुबास वातावरण में; ठीक वैसे ही जैसे पानी या कीचड़ में रहते हुए कमल।

He who works, having given up attachment, resigning his actions to God, is not touched by sin, even as a lotus leaf (is untouched) by water.

आत्मौपम्येन सर्वत्र समं पश्यति योऽर्जुन।
सुखं वा यदि वा दुःखं स योगी परमो मतः।। (गीता 6/32)

ātmaupamyena sarvatra samaṁ paśyati yo 'rjuna
sukhaṁ vā yadi vā duḥkhaṁ sa yogī paramo mataḥ

मुस्कुराती मानवता का महानतम् आदर्श है यह गीता मंत्र। ईश्वरीय चेतना सब में सम है, इस दृष्टि से सबके साथ अपनापन। किसी को सुखी देखकर प्रसन्नता ! दुखी देखकर स्वयं को पीड़ा ! परम योगी की गीता-दिव्यता ! साकार होने पर क्यों होगा भ्रष्टाचार -अत्याचार ?

He, O Arjuna, who sees with equality everything, in the image of his own self, whether in pleasure or in pain, he is considered a perfect yogi.

मत्तः परतरं नान्यत्किञ्चिदस्ति धनञ्जय।
मयि सर्वमिदं प्रोतं सूत्रे मणिगणा इव।। (गीता 7/7)

mattaḥ parataraṁ nānyat kiñcid asti dhanañjaya
mayi sarvam idaṁ protaṁ sūtre maṇigaṇā iva

जाति, वर्ग, वर्ण, रूप, रंग अनेक हैं; अपनी अपनी प्रारब्ध अनुसार कोई निर्धन-धनवान , पदाधिकारी -कर्मचारी हो सकते हैं; लेकिन ईश्वरीय चेतना सब में एक है, ठीक वैसे ही, जैसे माला में मणियाँ (मनके) अनेक, लेकिन सूत्र एक। मानसिक शांति पारिवारिक सद्भावना, समाजिक समरसता, राष्ट्रीय एकता एवं विश्व बन्धुत्व की दिव्यता छिपी हुई है इस गीता भाव में ।

There is nothing whatever that is higher than I, O Winner of wealth (Arjuna). All that is here is strung on me as rows of gems on a string.

तस्मात्सर्वेषु कालेषु मामनुस्मर युध्य च ।
मय्यर्पितमनोबुद्धिर्मामेवैष्यस्यसंशयम् ।। (गीता 8/7)

tasmāt sarveṣu kāleṣu mām anusmara yudhya ca
mayy arpitamanobuddhir mām evai 'ṣyasy asaṁśayaḥ

जीवन है तो संघर्ष साथ रहेंगे ही; संघर्षों में मन घबराये-उकताये नहीं, मनोबल मजबूत रहे- इसी के लिये है यह गीता प्रेरणा। जीवन संघर्षों में भगवान का स्मरण बना रहे। ईश्वरीय ध्यान स्मरण जीवन की ऊर्जा, शक्ति, शान्ति और बल मजबूत सम्बल है। मन बुद्धि भगवान को अर्पित अर्थात् 'साथी' एवं जीवन रथ के सारथी भगवान्! चिन्ता मिटेगी; सफलता मिलेगी।।

Therefore at all times remember Me and fight When thy mind and understanding are set on Me to Me alone shalt thou come without doubt.

मयाध्यक्षेण प्रकृतिः सूयते सचराचरम्।
हेतुनानेन कौन्तेय जगद्विपरिवर्तते।। (गीता 9/10)

mayā 'dhyakṣeṇa prakṛtiḥ sūyate sacarācaram
hetunā 'nena kaunteya jagad viparivartate

प्रकृति ईश्वर द्वारा संचालित है। प्रकृति के साथ ईश्वरीय आस्था जुड़ने से प्रकृति सम्मान पायेगी, प्रदूषण कम होगा । प्रकृति या समूची सृष्टि परिवर्तन के चक्र में है लेकिन ईश्वरीय सत्ता अधिष्ठान है। वैज्ञानिक प्रमाणिकता का ग्रन्थ है भगवद्गीता। बिना किसी स्थिर सत्ता के परिवर्तन का चक्र चल ही नहीं सकता-यह सर्वमान्य तथ्य है।

Under My guidance, nature (prakrti) gives birth to all things, moving and unmoving and by this means, O Son of Kunti (Arjuna), the world revolves.

महर्षयः सप्त पूर्वे चत्वारो मनवस्तथा।
मद्भावा मानसा जाता येषां लोक इमाः प्रजाः।। (गीता 10/6)

maharṣayaḥ sapta pūrve catvāro manavas tathā
madbhāvā mānasā jātā yeṣāṁ loka imāḥ prajāḥ

कितना प्रेरक भावार्थ है इस गीता श्लोक में। बिना भेद भाव के समूची सृष्टि, प्रजा ईश्वरीय भाव संकल्प से अर्थात् सब एक ही ईश्वर के हैं, उससे हैं! सृष्टि के प्रारम्भ में ऋषि,मनु–फिर आगे प्रजा ! इस का अभिप्राय ऋषियों की त्याग, तप परहित की परम्परा जीवन का आधार बनें और मानव हैं, मानव बन कर रहें, मानवता का सम्मान करें!

The seven great sages of old, and the four Manus also are of My nature and born of My mind and from them are all these creatures in the world.

दिवि सूर्यसहस्रस्य भवेद्युगपदुत्थिता।
यदि भाः सदृशी सा स्याद्भासतस्य महात्मनः ।। (गीता 11/12)

divi sūryasahasrasya bhaved yugapad utthitā
yadi bhāḥ sadṛśī sā syād bhāsas tasya mahātmanaḥ

ईश्वरीय सत्ता विराट प्रकाशमय है। इस गीता श्लोक अनुसार हजार सूर्यो का प्रकाश एक साथ भी ईश्वरीय प्रकाश की तुलना नहीं कर सकता। ईश्वरीय अंश होने से जीव मात्र का स्वरूप भी प्रकाश है। इसीलिये अन्धकार से प्रकाश हमारी स्वाभाविक परम्परा है। अज्ञानता के अन्धकार में ही जीव बुराइयों में प्रवृत्त होता है, विवेक ज्ञान का प्रकाश सन्मार्ग दिखाता है, बुराइयों में गिरने से बचाता है! आओ बढ़ें अन्धकार से प्रकाश की ओर !

If the light of a thousand suns were to blaze forth all at once in the sky, that might resemble the splendour of that exalted Being.

सन्नियम्येन्द्रियग्रामं सर्वत्र समबुद्धयः।
ते प्राप्नुवन्ति मामेव सर्वभूतहिते रताः।। (गीता 12/4)

sanniyamyendriyagrāmaṁ sarvatra samabuddhayaḥ
te prāpnuvanti mām eva sarvabhūtahite ratāḥ

व्यक्तित्व विकास में अद्भुत व्यापक निखार का मूल मंत्र है यह गीता श्लोक। खाने–पीने, बोलने, देखने आदि में संयम की स्थिति। प्राणी,पदार्थ, परिस्थितियों में समता एवं विशेष रूप से समस्त प्राणियों के प्रति हित चिन्तन। 'सर्वभूतहिते रताः' जैसे आदर्श गीता वाक्य सिद्ध करते हैं कि यह ग्रन्थ हिन्दुओं की आस्था तो है, लेकिन केवल हिन्दुओं के लिये नहीं, समग्र प्राणि जगत के कल्याण की अनूठी वैश्विक प्रेरणा है।

By restraining all the senses, being even-minded in all conditions, rejoicing, in the welfare of all creatures, they come to Me indeed (just like the others)

बहिरन्तश्च भूतानामचरं चरमेव च ।
सूक्ष्मत्वात्तदविज्ञेयं दूरस्थं चान्तिके च तत्।। (गीता 13/15)

bahir antaś ca bhūtānām acaraṁ caram eva ca
sūkṣmatvāt tad avijñeyaṁ dūrasthaṁ cāntike ca tat

परमात्मा हर कण में है, हर क्षण में है। भीतर है, बाहर है! दूर से दूर एवं निकट से निकट वही है। हम जो हैं, जहाँ हैं, जैसे हैं- परमात्मा की निकटता का, उनके अपनत्व का अनुभव कर सकते हैं। कहीं, किसी प्रकार का भेदभाव नहीं एक विशेष अति उपयोगी प्रेरणा –'बाहर' 'सर्वव्यापी' रूप से परमात्मा हमारे कर्मो का साक्षी है, 'भीतर' 'अन्तर्यामी' रूप से हमारे विचारों भावों का ! शुद्ध भाव एवं सत्कर्मो की अनूठी प्रेरणा !

He is without and within all beings. He is unmoving as also moving. He is too subtle to be known. He is far away and yet is He near.

कर्मणः सुकृतस्याहुः सात्त्विकं निर्मलं फलम्।
रजसस्तु फलं दुःखमज्ञानं तमसः फलम्।। (गीता 14/16)

karmaṇaḥ sukṛtasyā 'huḥ sāttvikaṁ nirmalaṁ phalam
rajasas tu phalaṁ duḥkham ajñānaṁ tamasaḥ phalam

सतोगुण, रजोगुण, तमोगुण, जीवन यात्रा में स्वाभाविक हैं। सत्त्वगुण सत्कर्मों में प्रेरित करता है, सत्कर्मो का परिणाम अन्तःकरण की निर्मलता और सुख होता ही है। रजोगुण लोभ, अहंकार, कामनाओं आदि की अधिकता से कर्मों में प्रवृत करता है। जहां ये वृत्तियां हावी होंगी, परिणाम मानसिक विक्षेपता एवं दुःख की स्थिति। तमोगुण प्रमाद,आलस्य अतिनिद्रा आदि में ही लगाये रखकर जीवन में जड़ता की सी स्थिति बनाता है। बढ़ें प्रमाद से पुरूषार्थ तथा स्वार्थ से परमार्थ की ओर !

The fruit of good action is said to be of the nature of "goodness" and pure; while the fruit of passion is pain, the fruit of dullness is ignorance.

शरीरं यदवाप्नोति यच्चाप्युत्क्रामतीश्वरः।
गृहीत्वैतानि संयाति वायुर्गन्धानिवाशयात्।। (गीता 15/8)

śarīraṁ yad avāpnoti yac cā 'py utkrāmatī 'śvaraḥ
gṛhītvai 'tāni saṁyāti vāyur gandhān ivā 'śayāt

शरीर की मृत्यु और उसके साथ यह भी निश्चित कि यहाँ का सब यही छूटना है। लाये नहीं थे, ले जायेंगे नहीं ! यहीं मिला है, यहीं के लिये मिला है। साथ जाती है शुभ-अशुभ कर्मो की सुगन्ध या दुर्गन्ध; गीता के इस श्लोक के अनुसार वैसे ही जैसे वायु फूलों के स्पर्श से सुगन्ध तथा गंदगी के ढेर से छूकर दुर्गन्ध लेकर आगे बढ़ती है।

When the lord takes up a body and when he leaves it, he takes these (the senses & mind) and goes even as the wind carries perfumes from their places.

दैवी सम्पद्विमोक्षाय निबन्धायासुरी मता।
मा शुचः सम्पदं दैवीमभिजातोऽसि पाण्डव ।। (गीता 16/5)

daivī sampad vimokṣāya nibandhāyā surī matā
mā śucaḥ sampadaṁ daivīm abhijāto 'si pāṇḍava

सीढ़ी छत की ऊँचाई पर भी ले जाती है, लेकिन संभल कर नहीं चले तो नीचे भी गिरा देती है। मनुष्य जीवन की भी यही स्थिति है। दैवी सदगुणों के आश्रय से मानव देवत्व की ऊँचाई तथा उस माध्यम से चिन्ता,भय, शोक एवं सब प्रकार के कर्म बंधन से मोक्ष पा सकता है, लेकिन अज्ञानतावश दुष्वृत्तियों, विकारों में फिसलकर पतन में भी गिर सकता है। गीता का यह भाव प्रेरित कर रहा है- ऐ मानव! चिन्ता मतकर, स्वभाव से तू देवत्व के लिये ही उत्पन्न हुआ है, अपने भीतर के देवत्व को पहचान।

The divine endowments are said to make for deliverance and the demoniac for bondage. Grieve not, O Pandava (Arjuna), thou art born with the divine endowments (for a divine destiny).

सद्भावे साधुभावे च सदित्येतत्प्रयुज्यते।
प्रशस्ते कर्मणि तथा सच्छब्दः पार्थ युज्यते।। (गीता 17/26)

sadbhāve sādhubhāve ca sad ity etat prayujyate
praśaste karmaṇi tathā sacchabdaḥ pārtha yujyate

परमात्मा रूपी सत्य को स्वीकार करो। 'सत्' की सुन्दर मंगलमय परम्परा जीवन की अनूठी प्रेरणा बन जायेगी। सत् के आधार से बुद्धि-सद्बुद्धि, विचार- सद्विचार,भाव -सद्भाव और आगे सद्गुण, सत्कर्म, सदाचार आदि की स्थिति स्वतः जीवन में आयेगी; जिसकी आज प्रबल आवश्यकता है। सत् अर्थात् परमात्मा को न स्वीकारने से ही जीवन दुर्बुद्धि, दुर्व्यसन, दुष्कर्म,दुर्भाव,दुराचार रूपी पतन में गिरता है।

The word "sat" is employed in the sense of reality and goodness; and so also, O Partha (Arjuna), the word "sat" is used for praiseworthy action.

यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम।। (गीता 18/78)

yatra yogeśvaraḥ kṛṣṇo yatra pārtho dhanurdharaḥ
tatra śrīr vijayo bhūtir dhruvā nītir matir mama

भगवत् गीता के प्रथम श्लोक में धृतराष्ट्र ने संजय से युद्ध परिणाम को लेकर प्रश्न किया था। सम्पूर्ण गीता उपदेश हो जाने पर अंतिम श्लोक में संजय स्पष्ट कहते है– राजन्! विजय तो सत्य की ही होगी। सत्ता के समक्ष सत्य कहने की अद्भुत स्थिति। जहाँ योगशवर कृष्ण हैं अर्थात् जहाँ केवल भोगवाद –भौतिकवाद नहीं 'अध्यात्म' 'योग' का आधार है तथा जहाँ अर्जुन अर्थात् कर्त्तव्य के प्रति समर्पित निष्ठा है, वहीं श्री, विजय, विभूति और अचल नीति है।

सार रूप में सीधी बात– 'कर्म' के साथ 'धर्म' भौतिकवाद के साथ अध्यात्म; पुरूषार्थ के साथ 'परमार्थ' का समन्वय ही सफलता का मूल मंत्र है।

Wherever there is Krishna, the lord of yoga, and Partha (Arjuna), the archer, I think, there will surely by fortune, victory, welfare and morality.

साभार : जीओ गीता

International Gita Mahotsav

17 November - 03 December 2017

Kurukshetra, India